



पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज



FOREST RESEARCH CENTRE FOR ECO-REHABILITATION PRAYAGRAJ

पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी
कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार

पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)
राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

कृषिवानिकी में शोध एवं नवाचार परिदृश्य

25 सितम्बर, 2020
अतिथि वक्ता

डॉ एस. पी. अहलावत वरिष्ठ वैज्ञानिक रा.पा.आ.सं. ब्यू.रो, नई दिल्ली	डॉ पी. के. कौशिक वरिष्ठ वैज्ञानिक आ.विव.आ.के., अगरतला	डॉ ननिता बेरी वरिष्ठ वैज्ञानिक उ.क.ब.आ.स., जबलपुर	श्री प्रेम सिंह प्रगतिशील कृषक बांदा
डॉ संजय सिंह प्रमुख पा.पु.व.आ.के., प्रयागराज	समन्वयक डॉ अनुपमा श्रीवास्तव वैज्ञानिक पा.पु.व.आ.के., प्रयागराज	आयोजन सचिव डॉ अनुपमा श्रीवास्तव वैज्ञानिक पा.पु.व.आ.के., प्रयागराज	

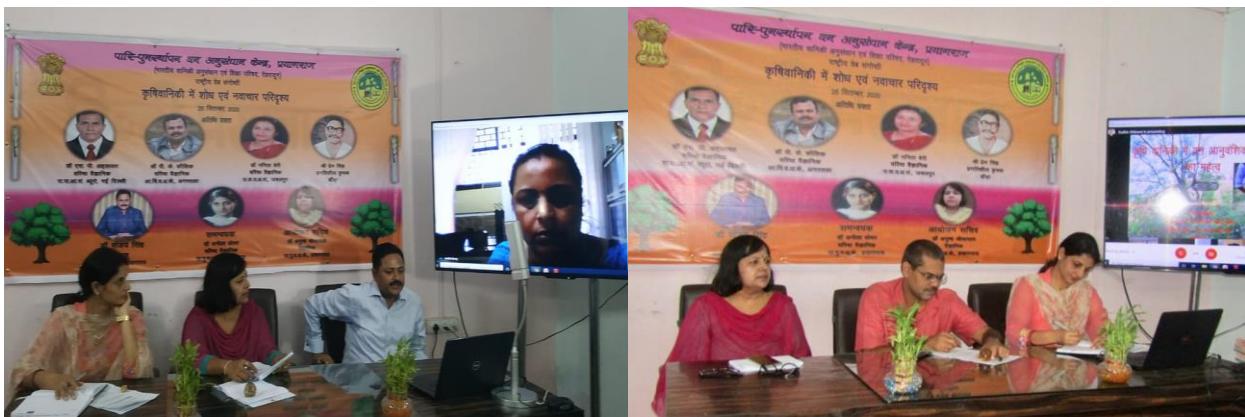
संगोष्ठी लिंक (गूगल मीट) - <https://meet.google.com/cjz-hupr-fzt>

दिनांक 25.09.2020 को पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार परिदृश्य विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ केन्द्र प्रमुख डा० संजय सिंह एवं वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। डा० सिंह ने आमंत्रित वक्ता डा० ननिता बेरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर तथा डा० एस.पी. अहलावत, राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली का ऑनलाइन स्वागत किया। डा० बेरी ने आत्मनिर्भर भारत हेतु प्रभावी कृषिवानिकी पद्धति पर व्याख्यान प्रस्तुत करते कृषिवानिकी के मुख्य उद्देश्य यथा फसल का चुनाव, जलवायु, सामाजिक आवश्यकता, मृदा परीक्षण के साथ राष्ट्रीय कृषिवानिकी नीति 2014 से पूर्णतया अवगत कराया।

आमंत्रित वक्ता डा० अहलावत ने वन आनुवांशिक सम्पदा का कृषि वानिकी में महत्व विषय पर व्याख्यान में कहा कि जैव विविधता संरक्षण में कृषि वानिकी का विशेष महत्व है। वन अनुसंधान केन्द्र, अगरतला के प्रमुख वैज्ञानिक डा० पवन कौशिक ने सुनिश्चित एवं सतत आय के अनुकूल कृषि वानिकी पद्धतियों की जानकारी दी।



वहीं कृषि अनुसंधान संस्थान, बांदा से प्रगतिशील कृषक, प्रेम सिंह ने कृषि वानिकी में कृषकों के हित रक्षा के साथ आवर्तणशील खेती में वृक्षों के समावेश पर बल दिया। केन्द्र प्रमुख डा. सिंह ने अकाष्ठ वन उत्पादन समावेश से कृषि वानिकी की विविधीकरण विषय से अवगत कराते हुए इस विषय पर वृहद चर्चा की।

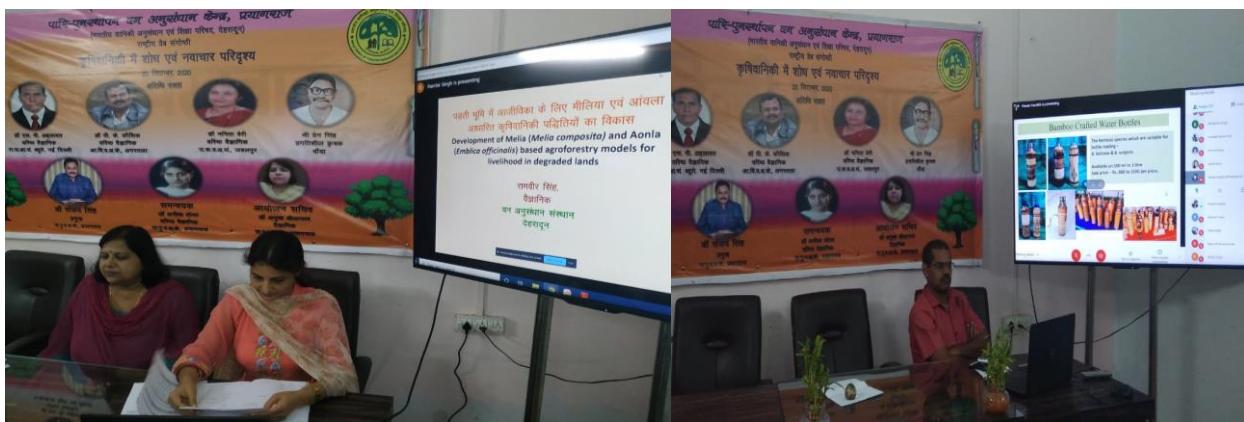


प्रथम तकनीकी सत्र में डा. चरण सिंह, वैज्ञानिक, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा बर्माड्रेक एवं पॉपलर आधारित कृषिवानिकी पद्धतियाँ विषय पर तथा डा. आर. बी. सिंह वैज्ञानिक वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा पड़ती भूमि में आजीविका के लिए मीलिया एवं आँवला आधारित कृषिवानिकी पद्धतियों का विकास विषय पर प्रस्तुति की। द्वितीय तकनीकी सत्र में डा. विलास सिंह, मुख्य तकनीकी अधिकारी, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर (राजस्थान) द्वारा राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में कुमठ आधारित परम्परागत कृषिवानिकी प्रणाली में फसल उत्पादन, मृदा पोषक तत्व और गोंद उत्पादन विषय पर तथा डा. हेमन्त कुमार, सहायक प्रोफेसर वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स, प्रयागराज द्वारा जलवायु परिवर्तन और आजीविका में सुधार के लिए बौंस आधारित कृषिवानिकी पद्धति विषय पर व्याख्यान दिया गया। डा. संजीत कुमार, विभागाध्यक्ष तथा वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, वाराणसी ने किसानों की आय बढ़ाने में कृषि वानिकी का महत्व पर चर्चा की।

कार्यक्रम समन्वयक डा. अनीता तोमर ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में कृषि वानिकी के अन्तर्गत पॉपलर प्रजाति को बढ़ावा देने के प्रयासों से और आलोक यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कृषि वानिकी के अंतर्गत कृषक द्वारा कम लागत से अधिक लाभ प्राप्त करने के उपाय तथा उनके स्रोतों से अवगत कराया। डा. अनुभा श्रीवास्तव, आयोजन सचिव, वैज्ञानिक ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में यूकेलिप्टस (सफेदा) का कृषि वानिकी में महत्व, क्लोनल रोपण सामग्री तथा विषयन सम्बंधी विषयों पर प्रस्तुतीकरण किया। समापन सत्र में डा. अनीता तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। संगोष्ठी में आनलाइन माध्यम से 100 से अधिक वैज्ञानिक, शोध छात्र व किसान आदि सम्मिलित हुए।

संगोष्ठी की संस्तुतियां

- I. कृषि वानिकी में भूमि के इष्टतम उपयोग के लिए विविध अवयवों यथा जैव ईंधन, औषधीय पादप, तेल बीज वृक्ष, लाख, तसर, शहद उत्पादन के व्यापक समावेश से मॉडल विकसित करने हेतु शोध की आवश्यकता है।
- II. कृषि वानिकी में एक दो प्रजातियों पर निर्भरता से मुक्त होकर वृक्ष फसल विविधीकरण पर बल देना चाहिए। हिमालयी आल्डर (अलनस नेपेलोन्सिस), वर्माङ्गेक (मीलिया डूबियो), पॉपलर (पोपुलस डेल्टोइडिस), कुमठ (अकोशिया सेनेगल), आंवला, यूकेलिप्टस, कैसुरिना, ग्रीविलिया, ल्यूसेना, प्रोसोपिस, सैलिक्स आधारित कृषि वानिकी पद्धतियों में विभिन्न फसलों के साथ अनुसंधान परिणाम हितकारकों हेतु उपयोगी सिद्ध होंगे।
- III. कृषि की वैकल्पिक पद्धति—आर्वर्तणशील खेती जिसमें एक तिहाई भाग में फलों व लकड़ी की खेती, एक तिहाई भाग में पशुओं का पालन और एक तिहाई भाग में कृषि जलवायिक क्षेत्र के अनुसार जैविक खेती की जाती है, में शोध एवं प्रसार की सम्भावनाएं हैं।
- IV. कृषिवानिकी में उत्पादन बढ़ाने तथा विभिन्न संगठनों के बीच प्रभावी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए, सभी हितधारकों के साथ सम्बंध स्थापित करके प्रसार और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है।
- V. बाँस की खेती की क्षमता को ध्यान में रखते हुए, सीमान्त और बंजर भूमि पर बाँस उगाने के लिए आधुनिक उपकरण और प्रौद्योगिकियां बाँस की उत्पादकता को बढ़ाने संबंधी अनुसंधान की आवश्यकता है।
- VI. उत्तराखण्ड में कृषि वानिकी के लिए महत्वपूर्ण उपयोगी प्रजातियां जैसे कचनार, भीमल, गेंठी, सीसल, भांग एवं बिछू घास कृषि वानिकी प्रजातियों को अपनाकर आजीविका में सुधार ला सकते हैं।
- VII. पूर्वी उत्तर प्रदेश में किसानों के लिए एक अतिरिक्त स्रोत के रूप में प्रोसोपिस सिनेरारिया और कैलिएण्ड्रा सूरीनामेन्सिस आधारित कृषि वानिकी के साथ लाख की खेती को भी सम्मिलित करने की प्रबल संभावना है।



राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

कृषिवानिकी में शोध एवं नवाचार परिदृश्य

दिनांक: 25.09.2020

कार्यक्रम विवरण

		उद्घाटन सत्र
10:30 – 10:45 पूर्वाह्न		<ul style="list-style-type: none"> – परिचय: डा. अनुभा श्रीवास्तव, वैज्ञानिक, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज – दीप प्रज्जवलन – स्वागत भाषण : डा. संजय सिंह, प्रमुख, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज – कार्यक्रम की रूप रेखा: डा. अनीता तोमर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, पा.पु.व.अ.के.
		तकनीकी सत्र— प्रथम
		आमंत्रित व्याख्यान <ul style="list-style-type: none"> – डा. ननिता बेरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर “आत्म निर्भर भारत हेतु प्रभावी कृषिवानिकी मॉडल” – डा. एस. पी. अहलावत, प्रभाग प्रमुख, पादप अन्वेषण एवं जर्मप्लाज्म संग्रह, रा.पा.आ.सं.बूरो, नई दिल्ली “वन आनुवांशिक सम्पदा का कृषि वानिकी में महत्व”
10:45 – 01:15	अपराह्न	व्याख्यान <ul style="list-style-type: none"> – डा. चरन सिंह, वैज्ञानिक वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून “वर्माङ्गेक एवं पॉपलर आधारित कृषिवानिकी पद्धतियाँ” – डा. आर. बी. सिंह, वैज्ञानिक वन अनुसंधान केन्द्र, देहरादून “पड़ती भूमि में आजीविका के लिए भौतिक एवं आंवला आधारित कृषिवानिकी पद्धतियों का विकास” – डा. कुमुद दूबे, वैज्ञानिक, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज “कृषिवानिकी का जन विकास में महत्व” – डा. अनीता तोमर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज “पूर्वी उत्तर प्रदेश में पॉपलर कृषिवानिकी”
		तकनीकी सत्र— द्वितीय
		आमंत्रित व्याख्यान <ul style="list-style-type: none"> – डा. पवन कुमार कौशिक, वैज्ञानिक, वन अनुसंधान केन्द्र, अगरतला “सुनिश्चित एवं सतत आय के अनुकूल कृषिवानिकी पद्धतियाँ” – श्री प्रेम सिंह, प्रगतिशील कृषक, कृषक शिक्षा केन्द्र, बांदा “कृषि वानिकी में कृषकों के हित”
		व्याख्यान <ul style="list-style-type: none"> – डा. संजय सिंह, प्रमुख, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज “अकाल वन उत्पादन समावेश से कृषि वानिकी का विविधीकरण” – डा. हेमन्त कुमार, सहायक प्रोफेसर, वानिकी महाविद्यालय, शुआट्स, प्रयागराज “जलवायु परिवर्तन और आजीविका में सुधार के लिए बौंस आधारित कृषिवानिकी पद्धति” – डा. संजीत कुमार, मुख्य समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, वाराणसी “किसानों का आय बढ़ाने में कृषि वानिकी का महत्व” – श्री आलोक यादव, वैज्ञानिक, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज “कृषि वानिकी: कृषक का न्यूनतम निवेश एवं अधिकतम लाभ का स्रोत” – डा. अनुभा श्रीवास्तव वैज्ञानिक, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज “पूर्वी उत्तर प्रदेश में यूकेलिप्ट्स कृषिवानिकी”
02:30 – 04:30	अपराह्न	सर्वांगीण सत्र
04:30 – 05:15	अपराह्न	<ul style="list-style-type: none"> – समूह चर्चा – संस्तुतियाँ – धन्यवाद ज्ञापन: डा. अनीता तोमर, वैज्ञानिक, पा.पु.व.अ.के., प्रयागराज

कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार पर हुई चर्चा

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र की ओर से शुक्रवार को कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार परिदृश्य विषय पर एक दिनी राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी हुई। कार्यक्रम की शुरुआत केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने वरिष्ठ वैज्ञानिकों की ओर से दीप प्रज्ञवलन से किया। आमंत्रित वक्ता डॉ. ननिता बेरी तथा डॉ. एस.पी. अहलावत का आँनलाइन स्वागत किया गया। डॉ. ननिता बेरी ने आत्मनिर्भर भारत के लिए प्रभावी कृषि वानिकी पद्धति की चर्चा की। डॉ. एस.पी. अहलावत ने वन आनुवंशिक संपदा का कृषि वानिकी में महत्व पर रोशनी डाली। डॉ. पवन कौशिक, कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अनीता तोमर, आलोक यादव, डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने विचार रखे। देहरादून से डॉ. चरण सिंह, रामवीर सिंह, डॉ. बिलास सिंह, डॉ. हेमंत कुमार, डॉ. संजीत कुमार ने शोधपत्र प्रस्तुत किए।

हिन्दुस्तान—26.09.2020

कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

प्रयागराज, २५ सितम्बर। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज द्वारा शुक्रवार को कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार परिदृश्य पर एक दिनी राष्ट्रीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

वरिष्ठ वैज्ञानिक, उत्तराकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की डॉ. ननिता बेरी ने आत्मनिर्भर भारत हेतु प्रभावी कृषि वानिकी पद्धति पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कृषि वानिकी के मुख्य उद्देश्य यथा फसल का चुनाव, जलवायु, सामाजिक आवश्यकता, मूदा परीक्षण के साथ राष्ट्रीय कृषि वानिकी नीति २०१४ से अवगत कराया। राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली के डॉ. एस.पी. अहलावत ने वन आनुवंशिक संपदा का कृषि वानिकी में महत्व विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि जैव विविधता संरक्षण में कृषि वानिकी का विशेष महत्व है।

वन अनुसंधान केंद्र, अगरतला के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. पवन कौशिक ने सुनिश्चित एवं सतत आय के अनुकूल कृषि वानिकी पद्धतियों की जानकारी दी। वहाँ कृषि अनुसंधान संस्थान बांदा से प्रगतिशील



कृषक प्रेम सिंह ने कृषि वानिकी में कृषकों के हित रक्षा के साथ आवर्तणशील खेती में वृक्षों के समावेश पर बल दिया। केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने अकाष वन उत्पादन समावेश से कृषि वानिकी की विविधीकरण विषय से अवगत कराते हुए इस विषय पर बहुद चर्चा की। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अनीता तोमर ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में यूकेलिप्ट्स का कृषि वानिकी में महत्व से अवगत कराया। अंतिम सत्र में डॉ. तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। वन अनुसंधान संस्थान देहरादून से डॉ. चरण सिंह, रामवीर सिंह, शुक्र वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर से डॉ. बिलास सिंह, शुआद्दस, प्रयागराज से डॉ. हेमंत कुमार, कृषि विज्ञान केंद्र, वाराणसी से डॉ. संजीत कुमार ने अपने-अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

‘जैव विविधता संरक्षण में कृषि वानिकी की विशेष भूमिका’

४
दैनिक जागरण
प्रयागराज, २६ सितंबर, २०२०
www.jagran.com

जागरण संवाददाता, प्रयागराज : पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज में शुक्रवार को ‘कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार परिदृश्य’ विषय पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी हुई। इसमें आमंत्रित वक्ता राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (नई दिल्ली) के डॉ. एस.पी. अहलावत ने कहा कि जैव विविधता संरक्षण में कृषि वानिकी का विशेष महत्व है।
आमंत्रित वक्ता उत्तराकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (जबलपुर) की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ननिता बेरी ने ‘आत्मनिर्भर भारत’ के लिए प्रभावी कृषि वानिकी पद्धति पर व्याख्यान देते हुए कृषि वानिकी के मुख्य उद्देश्य से अवगत कराया। वन अनुसंधान केंद्र (अगरतला) के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. पवन कौशिक ने सुनिश्चित एवं सतत आय के

अनुकूल कृषि वानिकी पद्धतियों की जानकारी दी। कार्यक्रम समवयक डॉ. अनीता तोमर ने पूर्वी शूपी में कृषि वानिकी के तहत पापुलर प्रजाति को बढ़ावा देने, वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने कृषि वानिकी के तहत किसानों द्वारा कम लागत से ज्यादा आमदानी के उपयोग और उनके स्रोतों के बारे में बताया। आयोजन सचिव डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने पूर्वी शूपी में कृषि वानिकी में यूकेलिप्ट्स के महत्व से अवगत कराया। वन अनुसंधान संस्थान (देहरादून) से डॉ. चरण सिंह, रामवीर सिंह, शुक्र वन अनुसंधान संस्थान (जोधपुर) से डॉ. बिलास सिंह, शुआद्दस से डॉ. हेमंत कुमार, कृषि विज्ञान केंद्र (वाराणसी) से डॉ. संजीत कुमार ने अपने शोध प्रस्तुत किए। संगोष्ठी की शुरुआत केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह एवं वरिष्ठ वैज्ञानिकों के दीप प्रज्ञवलन से हुई।

दैनिक जागरण—26.09.2020

कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

प्रयागराज। पारि-पुन्नसीरामन
वन अनुशोधन केंद्र, प्रयागराज
द्वारा शुक्रवार को कृष्ण वानिकों में
गोष्ठी एवं नवाचार परिदृश्य पर
एक दिवसीय सारणी वेत्ता संगोष्ठी
वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने अपने-अपने
विभाग व्यक्त किये।
वरिष्ठ वैज्ञानिक, करते हुए

उत्तमाचारियों वन अनुसारी संकलण संस्थान, जलसुरु की डॉ. नीता विशेष म वन अं धेरो ने आवासनभर्पे भरत है प्रधानी कृषि वानकी इच्छा पर के प्रमुख व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कृषि कौशिक वानकी के मुख्य उद्देश्य वथा वानकी का उनाव, जलवायन, आव के पहलीवानों का उनाव, जलवायन, कृषि अ

Digitized by srujanika@gmail.com

के साथ राष्ट्रीय की नीति 2014 से करवा। राष्ट्रीय पादपक में संबंधित व्यापार एवं उस पर अलगाव ने व्यापक रूप से बढ़ावा दिया है। एस.पी.ओ.लालनाथ के विशेष विचारणा का कृपृष्ठ विवरण विचारणा पर चर्चा करता है जैसे विविधता प्रतिवर्तीत व्यक्ति प्रेम सिंह ने कृषि विविधी में व्यक्ति को किए रखा के साथ अतिविविध खेतों में व्यक्ति के सम्बन्ध पर बहुत ध्यान दिया है किंतु डॉ. इंद्रिय सिंह ने आकाश वर्मा उदाहरण समाचारों से कृषि विविधी की विविधताएँ विवरण से अवगत करते हुए इस अधिकतम लाभ प्राप्त करने के उभयं तथा उक्त सेवाएँ से अवगत करना साधी है डॉ. अमृता श्रीवास्तव, वैज्ञानिक ने व्यापक रूप से अलगाव पर ध्यान दिया है जैसा कि विविधता पर ध्यान दिया गया था। अतिविविध विवरण से अलगाव के उभयं तथा उक्त सेवाएँ से अवगत करना साधी है डॉ. अमृता श्रीवास्तव, वैज्ञानिक ने व्यापक रूप से अलगाव पर ध्यान दिया है जैसा कि विविधता पर ध्यान दिया गया था।

मैं कृषि वानिकी का
हल हूँ।

न्युज़वर्सन केंद्र,
अमरतला
व वैज्ञानिक डॉ. वरन
ने सुनिश्चित एवं
अनुकूल कृषि वानिकी
को जाकरता दी। वह
न्युसंधन संस्थान बादा से

विषय पर बहुत चर्चा की।
कार्यक्रम सम्पन्न करने वाली
तोम ने पूर्णी तरह प्रेसमें मैं कृषि
वानिकी को विवरण दिया। विवरण
को बढ़ावा देने के प्रयत्नों से
अपना करारा, वहिए वैज्ञानिक
आलोक यादों ने कृषि वानिकी के
अंतर्गत कृषक द्वारा किया गया से

अनुभव स्थानीय स्तर पर दर्शाया गया।
दूसरा सिंह, शुभा
न अनुभव स्थानीय स्तर पर दर्शाया गया।
दूसरा सिंह, शुभादास
प्रयत्नों से डॉ. बिलास कुमार कृषि
विज्ञान केंद्र, लालपाटा ने डॉ. मंजूजा
कुमार ने अपने अपने शुभा प
प्रयत्नों किए।

3. The following table shows the results of a study on the relationship between age and income.

Digitized by srujanika@gmail.com

कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज द्वारा शुक्रवार को कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार परिव्यवहार एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। वरिष्ठ वैज्ञानिक, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की डॉ. ननिता बेरी ने आत्मनिर्भर भारत हेतु प्रभावी कृषि वानिकी पद्धति पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कृषि वानिकी के मुख्य उद्देश्य यथा फसल का चुनाव, जलवायु, सामाजिक आवश्यकता, मृदा परीक्षण के साथ राष्ट्रीय कृषिवानिकी नीति 2014 से अवगत कराया।

कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी



प्रयागराज। पारि-पुनर्संख्यापन वन्न अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज द्वारा कृषि विनियोगी में शोध एवं नवाचार परिदृश्य विवरण पर एक टिक्कमोटी राशीय बेंक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह एवं वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप्र प्रज्वलित करके किया गया। डॉ. सिंह ने आमंत्रित

वरका ढांग निति बेरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, उपकारितावेदीय वन अनुमोदन संस्थान, जबलपुर तथा डॉ. एस. पो. अहलावत, ग्राहीय पापाद आन्तरिक संसाधन ब्यौरे नई दिल्ली का अस्सिनमेंट स्वतंत्रता किया। डॉ. बेरी ने आत्मनिर्भर भारत हेतु प्रधानी कृषिवानिकों पहुँचि पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि कृषिवानिकों के मूल जहर्यल वयस्ता फसल तक चुनाव, सामर्पणक आवश्यकता, मुद्रा परोपकार के, सलवारी, कृषिवानिकों ने 2014 में से पूर्णता अवगत कराया।

कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

प्रयागराज। आज दिनांक
25.09.2020 को पारि-पुनर्स्थापन
वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज द्वारा
कृषि वानिकी में शोध एवं नवाचार

आमंत्रित वक्ता डॉ. ननिता बेरी,
वरिष्ठ वैज्ञानिक, उष्णकटिबंधीय वन
अनुसंधान संस्थान, जबलपुर तथा
डॉ. एस. पी. अहलावत, राष्ट्रीय

यथा फसल का चुनाव, जलवायु, सामाजिक आवश्यकता, मृदा परी क्षण वें साथ राष्ट्रीय कृषिवानिकी नीति 2014 से पूर्णता

की। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अनीता तोमर ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में कृषि वानिकी के अंतर्गत पापुलर प्रजाति को बढ़ावा देने के प्रयासों



परिदृश्य विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय बेब संगोष्ठी का आयाजन किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ केंद्र प्रमुख है। संजय सिंह एवं प्रधानमंत्री के द्वारा दीप प्रजातिरक्त करके किया गया। डॉ. सिंह ने पादप अनुवर्शिक संसाधन बूरा, नई दिल्ली का आनलाइन स्वागत किया। डॉ. बीरो ने आमनिस्तरि भारत हेतु प्रभावी कृषिविनियोगी पढ़ायी पर लगावान प्रस्तुत करते हुए कहा कि कृषिविनियोगी के मध्य उद्देश्य

न क्वांतु वानाको म रुद्राक्षाका हित रक्षा के साथ अवर्तणीशल खेती मैं वृक्षों के समावेश पर बल दिया। केंद्र प्रस्तुत डॉ सिंह ने अकाएष बन उत्पादन समाविश से क्वांतु वानिकी की विविधीकरण विषय से अवगत कराते हुए इस विषय पर वृहद चर्चा

की। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अनेता तोमर ने पूर्ण उत्तर प्रदेश में कृषि गणिकों के अंतर्गत पाउजर प्रजाति को बढ़ावा देने के प्रयासों से अवगत कराया। अलोक यादव, विरचित वैज्ञानिक ने कृषि गणिकों के अंतर्गत कृषक द्वारा कम लागत से अधिक लाभ प्राप्त करने के उपाय तथा उके जीतों से अवगत कराया। साथ ही डॉ. अनभा श्रीवास्तव, आयोगनां सचिव, वैज्ञानिक ने पूर्ण उत्तर प्रदेश में यूकोलिप्टस (सफेद) का कृषि गणिकों में हमत्र से अवगत कराया। अंतिम सत्र में डॉ तोमर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। संसांगोली में अनलाइन माध्यम से 100 से अधिक वैज्ञानिक, शोध अंत्र विकास एवं समितिलहुए। उन अनुसंधान संस्थान, देवराजून से डा. चरण सिंह, रामवीर सिंह, शोधक वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर से डा. बिलास सिंह, शुआदुस, प्रयागराज से डा. हेमंत कर्मार, कुमैविजान केंद्र, तारानगी से डा. सूजीत कुमार ने अपने-अपने शोधपत्र